इकाई 5 बॉक्सर विद्रोह

इकाई की रूपरेखा

5.0 उद्देश्य

5.1 प्रस्तावना

5.2 चीन की सामाजिक-आर्थिक परिस्थितियां

5.3 साम्राज्यवाद

5.4 यीहेतुआन (Yihetuan)

- 5.4.1 शांडुंग (Shandong) क्यों?
- 5.4.2 विद्रोह
- 5.4.3 साम्राज्यवादियों का हस्तक्षेप
- 5.4.4 बॉक्सर प्रोटोकॉल

5.5 विद्वानों की बहस

5.6 सारांश

5.7 शब्दावली

5.8 बोध प्रश्नों के उत्तर

5.0 उद्देश्य

इस इकाई को पढ़ने के बाद आप निम्न बातों की व्याख्या कर पायेंगे:

- उन्नीसवीं शताब्दी के अंतिम वर्षों में चीन की बिगड़ती सामाजिक-आर्थिक स्थितियां;
- चीन में साम्राज्यवादी अतिक्रमण की सीमा;
- बॉक्सरों का उदय, उनकी गतिविधियां और उन्हें दबाने के प्रयास; और
- बॉक्सर विद्रोह का अंत करने वाले बॉक्सर प्रोटोकॉल की विशेषताएं।

5.1 प्रस्तावना

सन् 1900 बॉक्सर विद्रोह या *यीहेतुआन* आंदोलन साम्राज्यवाद के विरुद्ध एक बड़ा किसान विद्रोह था, *यीहेतुआन* का अर्थ होता है सदाचारिता और तालमेल का एक समाज। इस संगठन का उदय और विकास चीन के शांडुंग (Shandong) प्रांत में हुआ। चीनी जिसे अधिकारिक तौर पर *यीहेतुआन* आंदोलन कहते हैं, पश्चिमी विद्वान उसे बॉक्सर विद्रोह कहते हैं। इसे बॉक्सर (या मुक्केबाज़) विद्रोह इसलिए कहते हैं क्योंकि इस आंदोलन के अनेक कार्यकर्ता और क्रांतिकारी चीनी युद्ध कलाओं का अभ्यास करते थे, जिनमें ''बॉक्सिंग (या, मुक्केबाजी) भी एक थी।

वैसे तो इस आंदोलन का पहला निशाना ईसाई धर्म का प्रचार करने वाले मिशनरी थे, फिर भी इसका असली ध्येय साम्राज्यवाद के विरुद्ध संघर्ष करना था। यह हिंसक, नाटकीय और विप्लवकारी आंदोलन विदेशी शक्तियों द्वारा चीनी राष्ट्र को गुलाम बनाने और उन

बिगड़ती सामाजिक-आर्थिक स्थितियों का परिणाम था जिन्हें राजनीतिक स्तर पर सुधार करके रोकना संभव नहीं था। चीन पर पश्चिमी अतिक्रमण की कसर पूरी करने के लिए जापानी साम्राज्यवाद भी चीन को और कुचल देने वाली शक्ति के रूप में उभरा। मांचू शासन या छिंग (Qing) वंश अपनी आंतरिक स्थितियों के कारण और चीन पर साम्राज्यवादी प्रभुत्व होने के कारण भी सभी मोर्चों पर काफी हद तक कमजोर हो गया था। बॉक्सर विद्रोह ने साम्राज्यवादी शासकों और मांचू शासकों पर भी जबरदस्त प्रहार किया। अंत में सरकार ने साम्राज्यवादी ताकतों की मदद से इस आंदोलन को दबाया, जिसके परिणामस्वरूप 1910 के बॉक्सर प्रोटोकॉल पर हस्ताक्षर हुए - यह सबसे अपमानजनक असमान संधि थी। इसके तहत चीन को विदेशियों को जो हरजाने देने पड़े वे इतने भारी थे कि इन्हें वसूलने के लिए चीनी जनता को पीस डाला गया। इससे चीन की आंतरिक स्थिति और भी बिगड़ गयी, और अंत में इन्होंने और भी क्रांतिकारी विद्रोह को जन्म दिया, जिसकी परिणति 1911 में राजतंत्र का पतन के रूप में हुई। *यीहेतुआन* (बॉक्सर विद्रोह) के लगभग सभी पहलुओं पर इस इकाई में विचार किया गया है।

5.2 चीन की सामाजिक-आर्थिक परिस्थितियां

यहां हम 19वीं शताब्दी में चीन की सामाजिक-आर्थिक परिस्थितियों पर चर्चा कर रहे हैं।

इस अवधि के दौरान जनसंख्या में हुई वृद्धि के परिणामस्वरूप शिक्षित या साक्षर वर्ग में बेरोजगारों की संख्या में वृद्धि हुई। सरकारी नौकरियों के लिए होड़ मच गयी क्योंकि घटते संसाधनों के दावेदार अब और भी अधिक हो गये थे। छिंग (Qing) सरकार ने प्रशासनिक ढाँचे को जनसंख्या की वृद्धि और वाणिज्य के अनुरूप बनाने के लिए उसका पर्याप्त विस्तार नहीं किया। सरकार के संस्थात्मक ढाँचे में वृद्धि न हो पाने का अर्थ यह हुआ कि पढ़े-लिखे युवाओं की आरोही गतिशीलता में बाधा आई। नौकरी की होड और कुंठा के कारण सभी स्तरों पर भ्रष्टाचार फैल गया। घूस, भाई-भतीजावाद और पक्षपात ने प्रशासन की प्रक्रियाओं पर उलटा प्रभाव डाला। इसके चलते कन्फ्यूशिसवादी सिद्धांत की श्रेष्ठता भी भंग हुई। व्यक्तिगत गुट और संरक्षितों का जाल उभरा जिसका परीक्षा व्यवस्था, कराधान और न्याय-प्रशासन पर उल्टा प्रभाव पड़ा।

किसान और भी पिस गया। जिन प्रांतीय अधिकारियों का मुख्य काम यह था कि वह उनको दिये गये कोटे के अधिकार पर खेतीहरों से कर वसूल करें और कुछ अधिशेष या अतिरिक्त राशि अपने लिए रखें, वे अधिकारी आम आदमी के प्रति निर्मम बन गये। इन अधिकारियों से केंद्रीय कोषागार की माँग बहुत अधिक थी क्योंकि बीजिंग सरकार सेना, राजदरबार के अधिकारी वर्ग और भव्य समारोहों के रख-रखाव के लिए संघर्ष कर रही थी। अधिकारी अपनी ओर से इस बोझ को किसान वर्ग पर लाद रहे थे, जिसके लिए वे भारी माँगे उन पर थोप रहे थे और सभी किस्म के अत्याचारी तरीके अपना रहे थे। इसका परिणाम यह हुआ कि किसान विद्रोहों की संख्या बढ़ गयी। अनेक किसान गाँव छोड़कर शहरों को चले गये।

जिस लोक-सेवा ने चीन को शताब्दी दर शताब्दी और वंश दर वंश एक बनाये रखा था वही अब उसकी प्रगति में बाधा बन गयी। अधिकारियों के लोभ और जनता पर मुसीबतें थोपने के साथ-साथ अकाल और बाढ़ जैसी प्राकृतिक विपदाएं भी अक्सर आती रहती थी : सरकार के जनता को राहत देने की दिशा में असफल रहने के कारण गांवों में कष्ट और तनाव कई गुना बढ़ गये। प्रशासन संगठित दमन की मूर्ति ही दिखाई देता था। दूसरी ओर केन्द्रीय सत्ता की वैधता को देश के अनेक भागों में विद्रोहियों ने चुनौती दे रखी थी।

सरकार के कमजोर होने के अतिरिक्त जनसंख्या में भंयकर वृद्धि ने भी प्रौद्योगिक विकास को सीधे-सीधे अवरुद्ध किया। जैसा कि जॉन फेयर बैक ने कहा है, ''मानव शक्ति के बहुतायत होने के कारण श्रम बचाने वाले उपकरण-खर्चीले पड़े''। मानव जीवन और मानव श्रम दोनों ही बहुत सस्ते हो गये थे। आम आदमी के लिए जीवन अस्तित्व के लिए संघर्ष हो कर रह गया था। परिवारों को अनाज के प्रत्येक दाने के लिए पानी देना पड़ता था। कुछ लोग करों से बचने के लिए धनी और शक्तिशाली जमींदारों से जुड़ जाते थे और उन्हें मजदूर, गुंडे और लड़कियां देते थे। जो लोग शहरों को भाग गये, उनमें से भाग्यशाली लोग जीवित रहने के लिए सस्ते में अपना श्रम बेच देते थे। बाकी भिखारी, वेश्या, अपराधी आदि हो गये, आत्म-निर्भर किसान के लिए भी यह मुश्किल का समय था। उसे निर्लज्ज अधिकारियों, बड़े जमींदारों के गुंडों और भूमिहीन वर्ग से निकलने वाले डाकुओं से सुरक्षा की आवश्यकता होती थी।

चीन की सामाजिक-आर्थिक स्थिति में इस गहराते संकट को साम्राज्यवाद की कुटील और भयावह माँगों ने और भी हवा दी।

5.3 साम्राज्यवाद

अफीम युद्धों में चीन की सैन्य हार और असमान संधि व्यवस्था ने चीन को पश्चिमी ताकतों का एक अर्ध-उपनिवेश सा बना दिया था। साम्राज्यवादी आधुनिकीकरण के नाम पर अपनी कार्यवाहियों को निर्लज्जता से उचित ठहराते थे। उदाहरण के लिए, इंग्लैंड यह दावा करता था कि उसके इस कार्य से चीन राष्ट्रों के परिवार में आ गया था और समानता की शर्तों पर अंतर्राष्ट्रीय व्यापार में प्रवेश पा रहा था। लेकिन बाहरी हस्तक्षेप ने सम्राट की स्थिति को खटाई में डाल दिया। लोग जिस सम्राट के 'स्वर्ग के पुत्र' होने में विश्वास करते थे उसे अशक्त देखकर वे निराशा और आघात की स्थिति में थे।

और बातों के साथ, चीन में पश्चिमी ताकतों की घुसपैठ ने भारी संख्या में ईसाई मिशनरियों को प्रवेश दिलाया और चीनियों के साथ व्यापार करने के लिए बिचौलियों का एक वर्ग खड़ा किया जिन्हें कम्प्रेड़ोर (Compradore) कहा जाता था। इस दोनों कारकों ने बाद के वर्षों में देश पर काफी प्रभाव डाला। विदेशी ताकतों और बिगड़ती सामाजिक-आर्थिक स्थितियों की चुनौतियों से सफलतापूर्वक निपटने के लिए छिंग (Qing) सरकार ने सुधारों के जरिए व्यवस्था को आधुनिक बनाने का प्रयास किया। 1860 के दशक में ''स्वयं-सशक्तिकरण'' आंदोलन छेड़ा गया और बाद में चीनी जीवन के कुछ पहलुओं को कम से कम आंशिक तौर पर ही आधुनिक बनाने के लिए शाही फरमान और कानून पारित किये गये। शिक्षा, सैनिक प्रशिक्षण, विज्ञान, प्रौद्योगिकी और कानूनी व्यवस्था सभी सुधार आंदोलन के दायरे में आ गये। 1898 में सरकारी तौर पर लागू किये तथाकथित ''सौ दिनों के सुधार'' में इनमें से अनेक विषयों को छुआ गया, लेकिन ये सुधार ''बहुत कम और बहुत देरी से'' होने के कारण एक ढहती व्यवस्था द्वारा अपने आपको व्यवस्थित रखने के अंतिम प्रयास जैसे दिखायी दिये। (इकाई 6 देखें)

उन्नीसवीं शताब्दी के अंतिम वर्षों में विश्व पूंजीवाद अपने एकाधिकारवादी चरण में प्रवेश कर गया था जो कि साम्राज्यवाद का चरण होती है, ऐसे चरण में, लेनिन के शब्दों में, ''वस्तुओं के निर्यात की तुलना में पूंजी का निर्यात अत्यधिक महत्वपूर्ण हो जाता है''। विश्व के क्षेत्रीय विभाजन के लिए संघर्ष अत्यधिक तेज हो गया। चीन इस एकाधिकारवादी चरण का एक शिकार था। 1895 में जापान के हाथों चीन की हार और एक और असमान संधि - शिमोनोसेकी संधि संपन्न होने से चीन में एक और साम्राज्यवादी प्रविष्टि हो गयी। चीनियों के लिए यह संकट कभी इतना गंभीर नहीं रहा। शिमोनोसेकी की संधि में यह

प्रावधान था कि जापानी व्यापारी चीन के संधि बंदरगाहों में कारखाने चालू कर सकते थे। इस प्रावधान से साम्राज्यवाद की यह माँग पूरी हुई कि उसके पास पूंजी के निर्यात के लिए निकासी के मार्ग हों। चीन को इस बात के लिए बाध्य किया गया था कि वह पहले की असमान संधियों में सबसे अनुकूल राष्ट्र-संबंधी शर्त को स्वीकार करे जिसका अर्थ यह होता था कि एक को दिये गये विशेषाधिकार दूसरों को भी दिये जायें। इसलिए, जैसे ही जापान को चीन में कारखाने चालू करने का विशेषाधिकार मिला, दूसरी तमाम ताकतों को भी यह विशेषाधिकार मिल गया। 1895-96 के वर्ष में ही कुछ कारखाने चीन में स्थापित हो गये थे जो अपने लिए मुनाफा कमाने की गरज से न केवल चीनियों से सस्ती मजदूरी लेते थे बल्कि इसके अपने उद्योग के विकास को भी अवरुद्ध करते थे।

जापान ने भी चीन पर युद्ध का भारी हरजाना थोप दिया था जिसकी अदायगी के लिए छिंग (Qing) सरकार को रूस-फ्रांस और आंग्ल-जर्मन एकाधिकार - पूंजीवादी गुटों से दो बड़े ऋण लेने पड़े। बदले में इन गुटों को चीन में विशेषाधिकार देने पड़े। इन ऋणों से जुड़ी ऊंची ब्याज-दरों और राजनीतिक शर्तों ने चीनी प्रभुसत्ता का मजाक बना दिया। साम्राज्यवादी चीन में जिन विदेशी बैंकों के जरिये पूंजी का निर्यात करते थे उन्होंने भी मांचू सरकार के सामने अपनी शर्त रखी।

शिमोनोसेकी की संधि में जापान के चीनी क्षेत्र के बड़े भू-भागों पर कब्जे का भी प्रावधान था – ये थे लियाओडुंग (Liaodong) प्रायद्वीप और ताइवान। इससे चीनी क्षेत्र के लिए अंतर-साम्राज्यवादी छीना-झपटी की प्रक्रिया की भी शुरुआत हुई। एक समय ऐसा आया जब चीन का विभाजन लगभग अपरिहार्य दिखता था। 1896-98 के बीच अधिकांश चीन विभिन्न साम्राज्यवादी ताकतों के प्रभाव में बंट गया था। उदाहरण के लिए :

- रूस को महान दीवार के उत्तर के क्षेत्र मिले,
- यांगसी घाटी इंग्लैंड को मिली,
- शांडुंग जर्मनी को मिला,
- फ्यूजिएन जापान को और गुआंगडोंग, गुआंगशी और येनान के बड़े हिस्से फ्रांस को मिले।

इन क्षेत्रीय रियायतों पर अपना कब्जा बनाये रखने के लिए इन ताकतों ने रेलवे का निर्माण तथा अन्य कई निर्माण करने शुरू कर दिये और इन क्षेत्रों के संसाधनों का दोहन किया। इससे चीन में बाहर से पूंजी का आना भी बना रहा। साम्राज्यवादी ताकतों ने वैसे तो चीन का दोहन करने के लिए एक दूसरे का साथ दिया, फिर भी उन्होंने अपने आपको मिलने वाले प्रत्येक अधिकार और विशेषाधिकार को दूसरों से बचा कर भी रखा। इसलिए, इन ताकतों के बीच टकराव भी एक उल्लेखनीय विशेषता रही।

भारी संख्या में विदेशी मिशनरी चीन आये। अधिकारिक चीनी इतिहास में उन्हें ऐसे व्यक्ति बताया गया ''जो धर्म का लबादा पहनते थे लेकिन वास्तव में साम्राज्यवादी आक्रमकता को बढ़ावा देते थे''। ये मिशनरी चीन-जापान युद्ध से कई वर्षों पहले से चीन में आते रहे थे। उनकी गतिविधियों में गिरजाघरों का निर्माण करना, धर्म का प्रचार करना, और कभी-कभी स्थानीय बाशिंदों के साथ टकराना शामिल था। 1860 के दशक से चीन में मिशनरी-विरोधी संघर्ष छेड़े गये।

बॉक्सर विद्रोह का रुख निश्चित तौर पर ईसाई विरोधी या मिशनरी-विरोधी था, और इसलिए विद्वानों के गलियारों में चलने वाली बहसों में इस बात का समाधान निकालने के प्रयास हुए हैं कि यह विद्रोह मुख्य तौर पर ''विदेशी विरोधी'' था या ''मिशनरी-विरोधी''।

ignou THE PEOPLE'S UNIVERSITY

चीनियों की विवेचना के अनुसार, यह विद्रोह पहले तो साम्राज्यवाद-विरोधी और दूसरे नंबर पर मांचू-विरोधी भी था। संभावना इस बात की बहुत है कि मिशनरी क्योंकि विदेशी थे, इसलिए वे विद्रोहियों का पहला निशाना बने। जनसाधारण और किसान ईसाई धर्म के घोर विरोधी इस कारण से थे कि ईसाई धर्म सभी विदेशी वस्तुओं का प्रतीक था। बॉक्सर विद्रोहियों के लिए, विदेशी मिशनरी ''पहले शैतान'' थे और उनके स्वदेशी चीनी धर्मान्तरित ईसाई ''दूसरे शैतान'' थे। इसलिए दोनों को समाप्त करना आवश्यक था। विक्टर पर्सेल जैसे अनेक पश्चिमी विद्वान भी यही दृष्टिकोण रखते हैं।

बोध प्रश्न 1

1) उन्नीसवीं शताब्दी के अंतिम वर्षों में चीन की सामाजिक-आर्थिक परिस्थितियों पर लगभग 5 पंक्तियों में चर्चा करें।

....

....

....

....

....

2) चीन-जापान युद्ध के दौरान और बाद में साम्राज्यवाद ने चीन में किस तरह घुसपैठ की? लगभग 5 पंक्तियों में उत्तर दें।

....

....

....

....

....

5.4 यीहेतुआन (YIHETUAN)

एक लम्बे समय से चीन में गुप्त संगठन रहे हैं। इन संगठनों ने पद-दलितों को संगठित करके उन्हें अनेक स्थापित व्यवस्थाओं के विरुद्ध विद्रोही बनाया है। जब कभी कष्ट और दुःख असहनीय हो गये तो, लोगों ने या तो ''डकैती'' को अपना लिया या वे गुप्त संगठनों के सदस्य हो गये। ऐसे भी उदाहरण हैं कि गुप्त संगठन के नेताओं ने किसी वंश के विरुद्ध सफल विद्रोह खड़ा करके अपना वंश राज्य स्थापित कर लिया। बॉक्सर विद्रोहियों या **यीहेतुआन** के संबंध में यह विश्वास किया जाता है कि वे व्हाइट लोटस पंथ (या, श्वेत कमल) के थे। यह गुप्त संगठनों का एक गुट था जिसका दावा था कि वह उन मिंग सम्राटों का वंशज था जो 1644 में छिंग (Qing) के गद्दी हथियाने से पहले चीन पर शासन करते थे। उनकी गतिविधियाँ कुछ-कुछ दबी हुई थीं या एक लंबे समय तक वे ध्यान देने योग्य नहीं रही।

जैसा कि कुछ सरकारी दस्तावेजों से पता चलता है, अगस्त 1898 में, बॉक्सर विदोही झिल्ली और शांडुंग प्रांतों की सीमाओं पर उभरे। अक्टूबर में विद्रोह की शुरुआत वास्तव में ईसाई - परिवारों और घरों पर हमलों से हुई, इसके कुछ समय पहले इस आशय के

इश्तिहार या पोस्टर दिखायी पड़े थे कि ईसाई धर्मान्तरितों को मार डाला जायेगा। बॉक्सर विद्रोह में भाग लेने वाले अधिकांश व्यक्तियों के बारे में यह विश्वास किया जाता है कि वे कट्टर मांचू-विरोधी थे जो सभी ओर घृणा के पात्र विदेशियों के विरुद्ध दूसरे विद्रोहियों के साथ जुड़ गये थे। कुछ पोस्टर और भित्ति चित्रण (graffiti) से यह संकेत मिलता है कि कम से कम बॉक्सर विद्रोहियों का एक गुट मांचू-विरोधी था। विद्रोह की शुरुआत शांडुंग में हुई।

5.4.1 शांडुंग (Shandong) क्यों?

जिस शांडुंग प्रांत में विद्रोह की जड़ गहरी जमी थी, वहां हिंसा का फूटना कोई आकस्मिक घटना नहीं थी। शांडुंग को साम्राज्यवादी अतिक्रमणों को झेलना पड़ा। चीन-जापान युद्ध के दौरान, जापान की आक्रमणकारी सेनाओं ने शांडुंग प्रायद्वीप पर हमला किया और तीन वर्षों तक इस क्षेत्र पर इस धमकी के साथ कब्जा बनाये रखा कि जब तक हरजाने की राशि पूरी नहीं चुका दी जाती वह वहां से नहीं हटेगा। शांडुंग के दो बड़े बंदरगाह जर्मनी और इंग्लैंड के कब्जे में आ गये। जर्मनी ने पूरे प्रांत को अपना प्रभाव क्षेत्र भी घोषित कर दिया। साम्राज्यवादियों ने तटीय नौपरिवहन और रेलपथ शुरू किये तो उनका रोजगार के स्वरूप पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ा। अनेक कुली, फेरीवाले और छोटे व्यापारी बेरोजगार हो गये। इससे कुल बिगड़ती सामाजिक-आर्थिक स्थिति और बदतर हो गयी।

उन्नीसवीं शताब्दी के अंत तक, गिरजाघरों का एक जाल पूरे चीन में फैल चुका था। अकेले शांडुंग में एक हजार से ऊपर गिरजाघर और कोई अस्सी हजार मिशनरी और धर्मान्तरित ईसाई थे। साम्यवादियों के सत्ता में आने के बाद लिखे गये चीन के आधिकारिक इतिहास के अनुसार, मिशनरियों को चीनी जनता के खिलाफ हमले के हथियारों के रूप में इस्तेमाल किया जाता था जैसा कि एक विवरण से पता चलता है :

''अनेक मिशनरी - अपने महाधर्माध्यक्षों (आर्कबिशप), धर्माध्यक्षों (बिशप) और अन्य वरिष्ठ धर्माधिकारियों के निर्देशन में गुप्त सूचनाएं एकत्रित करते थे; जबरन खेत-खलिहान को हथिया लेते थे; निचली अदालतों पर दबाव डालते थे; लोगों से धन वसूलते थे; गुंडों और दूसरे गलत तत्वों को धर्मान्तरण के लिए खरीदते थे; वारदातें कराते थे; लोगों से धन वसूलते थे; आम चीनी आदमी पर धौंस जमाते थे; और हत्या जैसे अपराध करते थे। प्लेग की तरह उन्होंने चीनी जनता को असीम कष्ट दिये, बड़े-छोटे छिंग (Qing) अधिकारी साम्राज्यवादी अत्याचार के आगे नाक रगड़ते थे, जनसाधारण और मिशनरियों के बीच झगड़ों में वे हमेशा मिशनरियों का बचाव करते थे और जनसाधारण का दमन करते थे और उनके लिए सिर छिपाने को कोई जगह नहीं रह जाती थी।''

उपर्युक्त विवरण पढ़ने के बाद यह समझ में आ जाता है कि मिशनरियों के विरोध की घटनाएं इतनी अधिक क्यों हुई : प्रत्येक मामले में साम्राज्यवादी दंड की माँग करते थे, हरजाना वसूलते थे, और इस तरह-चर्च के प्रभाव का विस्तार करते थे, ऐसे में चीनी लोग साम्राज्यवादियों और उनके पिछलग्गुओं के खिलाफ हथियार उठाने के अलावा और क्या कर सकते थे।

5.4.2 विद्रोह

विदेशी गिरज़ाघरों के विरुद्ध जनता के संघर्षों की शुरुआत 1896 में शांडुंग में **दा दाओ हुई** (Big Sword Society) नाम के एक गुप्त संगठन के नेतृत्व में हुई। 1897 और 1898 में भी ऐसे ही संघर्ष छिड़े। **यीहेतुआन** आंदोलन ने जल्दी ही शांडुंग को अपने घेरे में ले लिया और अन्य जगहों पर भी यह आंदोलन फैल गया।

इस संगठन के सदस्यों में किसान, दस्तकार, शहरी गरीब और बेरोजगार दिहाड़ी मजदूर थे। इस संगठन की कभी कोई केंद्रीय शाखा नहीं रही। इसकी बुनियादी इकाई ''**दाओ** या पूजा स्थल'' था जिसके सदस्य युवक किशोर और अनेक स्त्रियाँ थीं। नेतागण और साधारण सदस्य दोनों ही कठोर अनुशासन का पालन करते थे और संगठन को एकजुट रखते थे। बॉक्सर दस्ते में 10 योद्धा होते थे और 10 दस्तों की एक वाहिनी (बिग्रेड) होती थी।

सन् 1899—1900 की सर्दियों में, बॉक्सरों ने साम्राज्यवाद का विरोध करने की गरज से शांडुंग में मिशनरियों और गिरजाघरों पर हमले किये, बीजिंग स्थिति विदेशियों ने आंदोलन के तेज होने की आशंका को देखते हुए छिंग (Qing) सरकार पर दबाव डाला कि वह इस आंदोलन को दबाये। शांडुंग के शासक गवर्नर, यूशियान (Yuxian), को हटा दिया गया और उसकी जगह युआन-शी-काई आया जिसकी ''नव सेना'' एक शक्तिशाली राजनीतिक शक्ति के रूप में उभर रही थी। विद्रोह को कुचलने के लिए उसने *यीहेतुआन* पर प्रतिबंध का ऐलान किया। इस विद्रोह को दबाने के अपने अभियान के तहत उसके सैनिकों को आज्ञा दी कि वे बॉक्सरों से जुड़े किसी भी व्यक्ति को गोली मार दें, उसने सैनिकों को यह आवश्वासन भी दिया कि ऐसा करने पर उन्हें पूरी सुरक्षा दी जायेगी।

यीहेतुआन ने अपनी साम्राज्यवाद-विरोधी गतिविधियों को बरकरार रखते हुए युआन की सेना से बहादुरी और चालाकी के साथ संग्राम किया। युआन ने अपनी सेना में नई टुकड़ियां जोड़कर उसे मजबूत कर लिया। उसने जर्मन फौजों और उन दूसरी सशस्त्र सेनाओं की भी मदद माँगी जिन्हें साम्राज्यवादियों ने **यीहेतुआन** के नरसंहार के लिए गठित किया था। **यीहेतुआन** को भारी नुकसान हुआ। सन् 1900 के वसंत काल में, भारी संख्या में बॉक्सर शांडुंग छोड़ कर बीजिंग क्षेत्र के पड़ोसी झिल्ली (Zhilli) (आज के होपेइ प्रांत) में चले गये। इसके बाद उनके अधिकांश गतिविधियों इसी क्षेत्र में चलीं लेकिन उनका प्रभाव शांसी, आंतरिक मंगोलिया, हूनान और चीन के उत्तर-पूर्वी प्रांतों में भी महसूस किया गया। बॉक्सरों को स्थानीय बाशिंदों का व्यापक समर्थन मिला। उनकी मदद से उन्होंने सरकारी सेनाओं से लड़ाइयां लड़ी और वे मिशनरियों, नव-ईसाइयों और उनके समर्थकों को मौत के घाट उतारते रहे। गिरजाघरों, विदेशियों की संपत्तियों, आवासों आदि का विनाश छिट-पुट तौर पर और क्रमबद्ध ढंग से भी जारी रहा। मई महीने में **यीहेतुआन** ने बीजिंग के दक्षिण में रणनीति रूप से महत्वपूर्ण शहर चोचो (Chochow) पर कब्जा कर लिया – उनकी लड़ाई चलने के साथ-साथ उनके सदस्यों की संख्या भी बहुत बड़ी होती गयी जिससे चीन में विदेशी ताकत और छिंग (Qing) सरकार भी चौंक गयी।

कुछ ही दिनों में बॉक्सर सेनाएं बीजिंग में घुस गयी। उन्होंने राजधानी आने वाले रेलपथों को नष्ट कर दिया जिससे उत्तर और दक्षिण से आ सकने वाली सरकारी अतिरिक्त सैन्य सहायता का रास्ता बंद हो गया। बीजिंग में **यीहेतुआन** की सेनाओं ने पहले छोटी-छोटी टुकड़ियों में गुप्त रूप से गतिविधियां की थी। उन्होंने ''विदेशियों का विनाश करो'' अभियान की माँग करने वाले गुमनाम इश्तिहार लगाए थे। राजधानी में मजदूर वर्ग के अनेक लोगों के इस संगठन में शामिल हो जाने से इसके सदस्यों की संख्या बहुत अधिक हो गयी – इश्तिहार अभियान से कई लोग इस आंदोलन से जुड़े। उनके इश्तिहार जनता की साम्राज्यवाद-विरोधी भावना और उस शासक वंश के प्रति उनकी चिढ़ को परिलक्षित करते जिसके बारे में उनका विश्वास था कि यह वंश विदेशियों के सहयोग से अपनी ही जनता का दमन कर रहा था। एक जनप्रिय इश्तिहार का पाठ यह था :

''बहुत घृणा है हमें उन संधियों से जो देश को हानि पहुंचाती हैं और जनता को संकट में डालती हैं। उच्चाधिकारी देश से गद्दारी करते हैं। निचले दर्जे के अधिकारी उनका अनुसरण करते हैं। जनता को उनकी शिकायतों का कोई हल नहीं मिलता''।

जून 1900 के प्रारंभ तक बीजिंग **यीहेतुआन** के इश्तिहारों से भर गया था। इसके सदस्य दिन में और रात में भी बीजिंग शहर में आने लगे। शहर के फाटक पर तैनात गारदों ने भी उन्हें, या तो सहानुभूतिपूर्ण भावनाओं के कारण या भयवश, रोका नहीं। लाल पगड़ियाँ और कमरबंद और लाल किनारी वाले जूते और मोजे पहने बॉक्सर तलवारें और भाले लिए राजधानी की सड़कों पर निकले। कुछ ही समय में बीजिंग में 800 से भी अधिक धार्मिक स्थल स्थापित किये गये। वे लोग शाही और कुलीन वर्ग के घरानों में ठहरे, पूरे शहर में फैल गये और उन्होंने विदेशियों पर हमले किये। असहाय विदेशियों ने दूतावास की रिहाइशों में या गिरजाघरों में सशस्त्र सुरक्षा के अधीन शरण ली। बॉक्सरों ने अपने प्रदर्शन अधिकांश तौर पर रात में किये। उन्होंने लोगों से आग्रह किया कि वे विदेशी वस्तुएं न खरीदें। उन्होंने शिक्षा देना और दूसरे अभियान जारी रखे।

इसके साथ-साथ, ऐसे ही संघर्ष तियानजिन में भी शुरू हुए और चले। यहां आंदोलन की शुरुआत इश्तिहार बांटने, धार्मिक स्थल स्थापित करने और सैनिक प्रशिक्षण के रूप में हुई। 1900 के मध्य तक वे अपनी तलवारें और भाले स्वयं बना रहे थे। गिरजाघरों को जलाने के साथ-साथ, उन्होंने बिजली के खंभों को भी तोड़ा और सीमा-शुल्क के कार्यालय को नष्ट कर दिया। दो-तीन महीनों में बॉक्सर विद्रोह ने समूचे बीजिंग-तियानजिन क्षेत्र को अपने घेरे में ले लिया। यह विद्रोह साम्राज्यवाद-विरोधी था, इस का संकेत इस तथ्य से मिलता है कि विद्रोहिणों की घृणा के तुरंत शिकार गिरजाघर, रेलपथ, बिजली के तार, स्टीमर और विदेशी सामान बने। सन् 1900 की गर्मियों में बीजिंग और तियानजिन पर वास्तव में *यीहेतुआन* का कब्जा हो गया था।

शांडुंग में शुरू होने वाली अपनी नाटकीय गतिविधियों के कुछ ही महीनों के भीतर, बॉक्सरों ने महान दीवार के दोनों ओर और येलो नदी (हवांग हो) के मध्यवर्ती और निम्नवर्ती समतल भागों में अपने विद्रोह का झंडा उठा लिया था। जब साम्राज्यवादी ताकतों ने यह देखा कि मांचू सरकार इस जनप्रिय विद्रोह को दबाने में अशक्त थी तो उन्होंने बॉक्सरों को दबाने का तरीका ढूंढने के लिए आपस में विचार-विमर्श शुरू कर दिया। ऐसा लगता था कि चीन में उनका अस्तित्व दांव पर था। जुलाई-अगस्त, 1900 तक जियांगशी, फुजियान, गुआंगशी, शांशी, गांसू प्रांतों में कई जगहों पर साम्राज्यवाद-विरोधी इश्तिहार दिखायी पड़े। सार्वजनिक मनोरंजन स्थलों पर लोग बाक्सिंग और दूसरी चीनी युद्ध-कलाओं का अभ्यास करते भी दिखायी दिये, इनमें से अनेक स्थानों पर लोगों ने गिरजाघरों को आग लगा दी और मिशनरियों को भगा दिया। ऐसे कई स्थानीय गुप्त संगठन, जो प्रारंभ में बॉक्सर विद्रोह का अंग नहीं थे, इस हिसंक साम्राज्यवाद-विरोधी संघर्ष में बॉक्सरों के साथ शामिल हो गये।

5.4.3 साम्राज्यवादियों का हस्तक्षेप

बॉक्सरों के मांचू-विरोधी दृष्टिकोण और उन्हें दबाने के युआन शी-काई और अन्य राजतंत्रीय सैनिक उच्चाधिकारियों के प्रयासों के बावजूद, विधवा साम्राज्ञी, शीशी की इस मुद्दे पर स्थिति अस्पष्ट रही। एक राजाज्ञा में तो यह कहा गया कि सभी विद्रोहियों को लुटेरा न माना जाये। एक और राजाज्ञा में यह कहा गया कि संगठन के सदस्य ''आपसी निगरानी रखने और आपकी मदद देने'' के प्राचीन सिद्धांत पर अमल करें। इससे साम्राज्यवादी और भी हताश हो गये और बॉक्सरों ने, बहुत संभवतः इसे आगे बढ़ने का संकेत या हरी झंडी समझा, विदेशी अधिकारी भी यह मानते थे कि राजदरबार के कई वरिष्ठ अधिकारी और कुछ राज्यपाल गुप्त रूप से इस ''राजद्रोही गुप्त संगठन'' को प्रोत्साहन दे रहे थे। इंग्लैंड, फ्रांस, जर्मनी, रूस और अमेरिका के पाँच विदेशी दूतों ने भी यह माँग की कि चीन सरकार *यीहेतुआन* को एक अपराधी संगठन घोषित करें, जिसका

अर्थ यह होता कि बॉक्सर विद्रोह पर राजदरबार के अपनी ही दृष्टिकोण का खंडन किया जाये। मांचू सरकार ने इसे अपने मामलों में सीधा हस्तक्षेप माना और यह महसूस किया कि विदेशी उनके लिए बॉक्सरों की अपेक्षा कहीं बड़ा खतरा थे।

मई आते-आते, विदेशी ताकतों ने अपनी सेनाओं को बॉक्सर विद्रोहियों के साथ टकराव के लिए तैयार करना शुरू कर दिया। आठ ताकतों – इंग्लैंड, फ्रांस, जर्मनी, आस्ट्रिया, इटली, जापान, अमेरिका और रूस – ने एक संयुक्त कमान बनायी। चीन में बने रहना उन सबका समान स्वार्थ था और चीनी राष्ट्रवाद पर प्रहार करने की गरज से फिलहाल उन्होंने अपने मतभेद भुला दिये। चीनी विदेश मंत्रालय (जोंगली यामेन) ने इन ताकतों से आग्रह किया कि वे अपनी सेनाओं को आगे न बढ़ाये। जब इस आग्रह पर कोई ध्यान नहीं दिया गया तो, चीन सरकार युद्ध के लिए तैयार हो गयी। बीजिंग पर संयुक्त सेनाओं की चढ़ाई चीन की प्रभुसत्ता लिए सीधा खतरा थी।

शाही सभा ने इन आठ ताकतों के सशस्त्र हस्तक्षेप से पैदा होने वाली स्थिति पर विचार-विमर्श करने के लिए 16 जून को एक बैठक निश्चित की। इस बैठक में बॉक्सर आंदोलन पर सामंतों और राजदरबार के वरिष्ठ अधिकारियों के भिन्न दृष्टिकोण सामने आये। इसमें स्पष्ट रूप से बॉक्सर-समर्थक और बॉक्सर-विरोधी दो गुट दिखायी दिये। विदेशी ताकतें सशस्त्र दमन की ठाने हुए थी, इसलिए राजदरबार ने एक राजाज्ञा जारी करके 21 जून, 1900 को युद्ध का ऐलान कर दिया। राजनयिकों से 24 घंटें के अंदर बीजिंग छोड़ देने को कह दिया गया, बाद में यह अवधि बढ़ा दी गयी। निर्धारित समय-सीमा समाप्त होते ही, चीनी सेनाओं ने दूतावासों पर गोलाबारी कर दी। उत्तरी चीन में युद्ध छिड़ा तो, दक्षिणी प्रांतों के राज्यपालों और वाइसरायों ने विदेशी ताकतों का साथ दिया और उनसे लड़ने के राजदरबार के निर्णय की अवहेलना कर दी। इससे राष्ट्र की फूट सामने आ गयी, जिससे साम्राज्यवादियों के लिए चीन का विभाजन करने और इसे पूरी तौर पर अपने अधीन करने के प्रयास का काम और भी आसान हो गया। 29 जून तक, बीजिंग सरकार ने एक अलग रूख अपना लिया। विधवा साम्राज्ञी ने अपने राजनयिकों के माध्यम से विदेशी सरकारों को यह स्पष्ट करने का प्रयास किया कि दंगाई ''भीड़'' को खत्म कर दिया जायेगा और सभी विदेशी दूतावासों की सुरक्षा की जायेगी, छिंग (Qing) सरकार के इस रवैये से युद्ध की घोषणा के पीछे के उसके मंतव्य पर प्रश्न चिह्न लग जाता है। चीनी साम्यवादी इतिहासकारों के अनुसार यह मांचू शासकों की एक युक्ति मात्र थी जिनका अंतिम और असली इरादा *यीहेतुआन* को सफाया करना, विदेशी ताकतों के साथ सहयोग करना और अपना शासन बनाये रखना था।

चीनी शासक वर्ग के एक बड़े हिस्से के सीधे समर्थन और एक दूसरे हिस्से के निष्क्रिय विरोध की स्थिति में, आठ राष्ट्रों की संयुक्त सेना ने जम कर लूटमार की, आसपास के क्षेत्रों में आंतक फैलाया और बॉक्सर विद्रोह को दबाने के लिय हिसंक कार्यवाहियां की। उनके युद्धपोत यांगसी नदी पर फैल गये और तोपवाहक नौकाओं की चीनी बंदरगाहों पर गश्त बढ़ गयी। उन्होंने साम्राज्यवादी ताकतों में अपनी सुरक्षा की निश्चितता देखने वाले जमींदारों और कुलीनों से दोस्ती गांठ ली।

यीहेतुआन के योद्धा आठ ताकतों की संसाधन और प्रौद्योगिकी की दृष्टि से कहीं अधिक संपन्न संयुक्त सेना के खिलाफ बहादुरी से लड़े। जुलाई-अगस्त 1900 में भीषण युद्ध हुआ जिसमें दोनों ओर जान-माल का नुकसान हुआ। अंग्रेजी सेनाएं और रूस और जापान की सेनाएं भी बीजिंग में घुस आयीं और अगस्त के मध्य तक बीजिंग विदेशी ताकतों के हाथों में आ गया। जैसे ही बीजिंग पर नियंत्रण का यह समाचार मिला, विधवा साम्राज्ञी और उसकी चौकड़ी बीजिंग से भाग खड़ी हुई।

और स्थानों पर भी भीषण युद्ध चला। बॉक्सर विद्रोहियों ने हर जगह कड़ा संघर्ष किया लेकिन अंत में उन्हें पराजय का मुंह देखना पड़ा। साम्राज्यवादी सेनाएं अपनी जीत से ही संतुष्ट नहीं हुई उन्होंने चीनी जनता पर अत्याचार और ज्यादतियां भी की। मार-काट, लूट, बलात्कार और आगजनी करने के अलावा उन्होंने कलाकृतियों, वैज्ञानिक उपकरणों, दुर्लभ पुस्तकों और चित्रों, अर्थात् चीन की प्राचीन, गौरवशाली सभ्यता के सभी जीवंत प्रमाणों को नष्ट कर दिया।

जुलाई 14, 1900 को तियानजिन का पतन हो जाने के बाद छिंग (Qing) सरकार ने संधि की माँग रखी और साम्राज्यवादी ताकतों को शांति वार्ता का खुला निमंत्रण दिया, लेकिन आठ राष्ट्रों की संयुक्त सेना बीजिंग पर कब्जा कर लेने के बाद ही हमले रोकने को सहमत हुई।

अगस्त के अंतिम दिनों में बातचीत शुरू हुई, लेकिन हस्तक्षेप करने वाले आठ राष्ट्रों को शांति की शर्तों पर आपस में सहमत होने में कुछ समय लगा। फिर भी, शायद आपस में कुछ कूटनीतिक युक्तियों के बाद, उन्होंने चीनी सरकार के साथ कुख्यात बॉक्सर प्रोटोकॉल पर हस्ताक्षर किये जिसके साथ ही चीनी इतिहास में बॉक्सर प्रकरण का औपचारिक अंत हुआ लेकिन इस प्रोटोकॉल से एक लोचदार साम्राज्यवाद-विरोधी लहर की भी शुरुआत हुई जिसने एक दशक के अंदर न केवल छिंग (Qing) वंश का बल्कि पूरी सम्राट-व्यवस्था का ही सफाया कर दिया।

5.4.4 बॉक्सर प्रोटोकॉल

मित्र सेनाओं में चीन को विभाजित करने के तरीके पर आपस में समझ न बन पाने के कारण चीन का बंटवारा होने से बच गया। इन ताकतों के बीच प्रतिद्वंद्विता भयंकर रूप ले चुकी थी। लेकिन अंतरराष्ट्रीय स्तर पर काफी वाद-विवाद के बाद दिसम्बर 1900 में चीन को एक संयुक्त पत्र दिया गया। इसके तुरंत बाद विचार-विमर्श शुरू हो गया। बातचीत कई महीनों चलती रही और दिसम्बर 1901 में जा कर ही अंतिम समझौतों पर हस्ताक्षर हुए।

सितम्बर 7, 1901 के इस बॉक्सर प्रोटोकॉल में 12 अनुच्छेद थे। ये इस प्रकार थे :

1. चीन के शाही परिवार का एक सदस्य बर्लिन जा कर एक जर्मन मंत्री बैरन बॉन केटलर की हत्या के लिए चीनी सम्राट और ग्रांड कौंसिल की ओर से जर्मन सम्राट से खेद प्रकट करेगा। उसकी हत्या के स्थल पर एक स्मारक बनाया जायेगा।
2. जिन-जिन शहरों में विदेशियों की हत्याएं हुई थीं या उनके साथ दुर्व्यवहार किया गया था, उन तमाम शहरों में लोक सेवा परीक्षाओं का निलम्बन।
3. चीन की राजस्व परिषद का उपाध्यक्ष जापान जाकर जापानी लिगेशन चांसलर की हत्या के लिए चीनी सम्राट और सरकार की ओर खेद प्रकट करेगा।
4. जिन-जिन विदेशी बस्तियों को ''अपवित्र'' करना पड़ा था, वहां प्रायश्चित का प्रतीक स्मारक बनाया जायेगा।
5. पाँच वर्षों तक हथियारों और गोला-बारूद का आयात नहीं होगा।
6. बीजिंग स्थित विदेशी दूतावास को विदेशियों के आवास के लिए आरक्षित रखा जायेगा।
7. बीजिंग और समुद्र के बीच स्वतंत्र सामूहिक संचार में बाधक बनने वाले दादू और अन्य किलों का ढहा दिया जायेगा।

8. कुछ विशिष्ट केंद्र पश्चिमी ताकतों के कब्जे में रहेंगे।

9. एक राजाज्ञा जारी करके विदेश-विरोधी किसी भी संगठन में शामिल होने वाले व्यक्ति के लिए मृत्युदंड का प्रावधान रखा जायेगा।

10. विदेशी भागीदारी से नदी, संरक्षण परिषदों की स्थापना और वाणिज्य और नौपरिवहन की विद्यमान संधियों में संशोधन करने के लिए बातचीत की जायेगी।

11. **जोंगली यामेन** (विदेशी कार्यालय) में सुधार किया जायेगा और उसे छह अन्य मंत्रालयों के ऊपर विदेश मंत्रालय का दर्जा किया जायेगा।

12. चालीस वर्षों की अवधि में 33 करोड़ 30 लाख अमेरिकी डालर के हरजाने का भुगतान किया जायेगा।

बॉक्सर प्रोटोकॉल का एक-एक प्रावधान चीनी प्रभुसत्ता और आत्म-सम्मान पर प्रहार था। हरजाने वाला प्रावधान सबसे कठोर था क्योंकि यह चीन के संसाधनों की तबाही करने वाला था। प्रत्येक वर्ष चीन की पहले से ही गरीब जनता पर डेढ़ करोड़ डालर के भुगतान का बोझ पड़ रहा था। भुगतान का जो तरीका रखा गया था उससे चीन की प्रभुसत्ता के अत्यंत व्यापक अतिक्रमण का बोध होता था। हरजाने की जमानत के तौर पर निम्न संसाधनों को लिया गया था :

- समुद्री सीमा-शुल्क और आंतरिक सीमा-शुल्कों का वह अंश जो अब तक चीनी नियंत्रण में था, और
- नमक कर।

जैसा कि किसी ने कहा था, मांचू सरकार ''पश्चिमी ताकतों के लिए ऋण वसूलने वाला एजेन्सी'' बन गई।

बॉक्सर प्रकरण का अंत तो हो गया, लेकिन इससे छिंग (Qing) सरकार द्वारा शुरू किये गये सुधारों का खोखलापन उजागर हो गया, क्योंकि इनसे चीन को अपमानजनक स्थिति से बचाया नहीं जा सका। पश्चिमी ताकतों ने चीन के प्रति किसी भी लिहाज या समझ से परे बर्ताव किया।

5.5 विद्वानों की बहस

विद्वानों ने बॉक्सर विद्रोह की असली प्रकृति, इसके प्रभाव और प्रतिक्रियाओं को समझने के लिए विविध स्रोतों का उपयोग किया है। इनमें प्रमुख हैं :

- चीन में उलझी विदेशी ताकतों के अधिकारिक प्रकाशन,
- मिशनरी दस्तावेज़ और लेख,
- चीन में उस समय रह रहे इतिहासकारों और दूसरे विद्वानों की पांडुलिपियां, और
- चीनी सरकार के प्रकाशन और दस्तावेज।

इन सभी को एक साथ लिया जाये तो इनसे काफी जानकारी मिलती है।

फिर भी, बॉक्सर विद्रोह की प्रकृति को लेकर अभी बहस चल रही है, क्या यह मुख्य तौर पर ईसाई-विरोधी या साम्राज्यवाद-विरोधी था? यदि यह ईसाई-विरोधी था तो, क्या यह प्रोटैस्टेंट-विरोधी की अपेक्षा कैथोलिक-विरोधी अधिक थी? बॉक्सर विद्रोही किस हद तक वंशवाद-विरोधी थे? ये सवाल हैं जिन के इर्दगिर्द में बहस चलती है। व्रिदोह के परिणाम

के बारे में मार्क्सवादी-लेनिनवादी दृष्टिकोण यह है कि चीनी सामंतवाद और विदेशी साम्राज्यवाद के बीच एक सुनियोजित षड़यंत्र ने इस आंदोलन को कुचला। गैर-मार्क्सवादी विवेचना यह कहती है कि चीनी व्यवस्था का आधुनिकीकरण असफल होने के कारण चीन एक कमजोर राष्ट्र रह गया। इस तरह इसके पास इतने संसाधन नहीं थे कि वह विदेशी हस्तक्षेप को रोक पाता या जनता की माँगों को संतोषजनक ढंग से पूरा कर पाता। यही कारण था कि छिंग (Qing) सरकार ने अपने आपको बॉक्सर विद्रोहियों से दूर रखा।

इस आंदोलन के बारे में एक सवाल जो बार-बार पूछा जाता है वह यह है : क्या बॉक्सर विद्रोही चीन में एक सफल राज्य कायम कर सकते थे? इसका आसान जवाब है शायद नहीं। उनके पास समर्पित सदस्य तो थे, लेकिन उनका संगठन कमजोर था। उन्हें मिलने वाले व्यापक समर्थन के बावजूद उन्हें संगठन की संज्ञा नहीं दी जा सकती क्योंकि उनकी संस्था मुख्य रूप से एक गुप्त संगठन था। इसने अलावा, विचारधारा के स्तर पर उनके पास देने को ऐसा कुछ नहीं था जो उस समय पतन के कगार पर टिकी राज्य की कन्फ्यूशियसवादी विचारधारा का स्थान ले सकता। ताइपिंग विद्रोहियों की तुलना में, उनके पास कृषि सुधार का कोई कार्यक्रम नहीं था यद्यपि उनके अधिकांश सदस्य किसान थे। उनका अकेला प्रगतिवादी सिद्धांत यह था कि वे महिलाओं को समानता का स्तर देते थे। कुल मिलाकर, उनका ध्येय चीन पर शासन करना नहीं, बल्कि अपने देश को उसके शत्रुओं से मुक्त कराना था।

बोध प्रश्न 2

1) लगभग 5 पंक्तियों में 1901 के बॉक्सर प्रोटोकॉल के ध्येयों और उद्देश्यों के विषय में बताइए।

....

....

....

....

....

2) लगभग 5 पंक्तियों में बॉक्सर विद्रोह की प्रकृति पर विद्वानों के स्तर पर चलने वाली बहस के विषय में बताइए।

....

....

....

....

....

5.6 सारांश

चीन के इतिहास में जो किसान विद्रोह होते रहे हैं, बॉक्सर विद्रोह उनमें से एक प्रमुख किसान विद्रोह था। यह उत्तरी चीन के किसानों का एक देशभक्तिपूर्ण विद्रोह था, जिसके साथ ही चीन के अन्य कई भागों में भी विद्रोह हुए जिसने चीनी राष्ट्रवाद के जन्म को

रास्ता दिखाया। यह विद्रोह पहले ईसाई मिशनरियों और ईसाई धर्मान्तरितों के खिलाफ शुरू हुआ और अंत में पूरी साम्राज्यवादी व्यवस्था के खिलाफ युद्ध छेड़ दिया गया। यह व्यवस्था की निर्ममता, अथक दुःखों, कष्टों और गरीबी का परिणाम था। जनसाधारण और अधिकारियों की आवश्यकताओं को पूरा कर पाने में मांचू सरकार की असफलता और जनता के साथ इसके निर्मम व्यवहार ने जनता को सरकार से पृथक कर दिया। इसके साथ, चीन में साम्राज्यवादियों के अतिक्रमण, और इसे इसकी गरिमा और प्रतिष्ठा से वंचित करने के कारण भी इस विद्रोह को भड़कने का अवसर मिला। छिंग (Qing) सरकार के माध्यम से इस आंदोलन को दबाने के साम्राज्यवादी ताकतों के प्रयासों को सफलता नहीं मिली क्योंकि छिंग (Qing) सरकार ने इसके लिए एक दोहरा दृष्टिकोण अपनाया। चीन के विरुद्ध सैन्य कार्यवाही करने की आठ राष्ट्रों की योजना का जवाब चीन ने युद्ध की घोषणा करके दिया, जो एक कमजोर प्रयास निकला। जल्दी ही शांति के लिए बातचीत शुरू हुई और इन ताकतों और छिंग (Qing) सरकार के बीच तथाकथित बॉक्सर प्रोटोकॉल संपन्न हुआ। चीन से कई रियायतें हथियाने के अलावा, इस अपमानजनक संधि में हरजाने की एक बड़ी राशि की अदायगी का भी प्रावधान था। यह राशि इतनी बड़ी थी कि इसका भुगतान करने पर चीन के सभी संसाधन चुक जाते। साम्राज्यवादी ताकतों के आपस में सहमत न हो पाने के कारण चीन का बंटवारा होने से बच गया।

चीन के लोग आज एक क्रांतिकारी संघर्ष के रूप में बॉक्सर विद्रोह की प्रशंसा करते हैं। *यीहेतुआन* बहादुर, बलिदानी और देशभक्त लोगों का एक संगठन था जिसने राष्ट्रवाद की भावना को प्रेरित किया।

5.7 शब्दावली

लिगेशन : एक देश के अधिकारियों का किसी दूसरे देश में मुख्यालय (दूतावास)।

प्रोटोकॉल : औपचारिक राजनयिक प्रक्रिया।

भित्ति-चित्रण (graffiti) : दीवार पर लेखन।

हर्जाना : युद्ध के बाद पराजित समूह द्वारा विजयी समूह को दिया जाने वाला मुआवजा।

5.8 बोध प्रश्नों के उत्तर

बोध प्रश्न 1

1) बेरोजगारी, जनसंख्या विस्फोट, भ्रष्टाचार और संस्थागत ढाँचे की विफलता, ये सब 19वीं शताब्दी के अंतिम वर्षों में चीन की सामाजिक-आर्थिक स्थितियों के बिगड़ने का कारण बने। देखिए भाग 5.2।

2) अफीम युद्ध में चीन की हार, पश्चिमी ताकतों के पक्ष में संपन्न होने वाली असमान संधियों और एकाधिकारवादी पूंजीवाद ने पश्चिमी ताकतों को चीन में साम्राज्यवाद की स्थापना करने के पर्याप्त अवसर दिये। देखिए भाग 5.3।

बोध प्रश्न 2

1) बॉक्सर प्रोटोकॉल का मुख्य उद्देश्य चीन का विभाजन करना और उसकी प्रभुसत्ता और अखंडता की जड़ों को खोदना था। देखिए उपभाग 5.4.3।

2) बॉक्सर-विद्रोह की प्रकृति पर यह बहस चल रही है कि यह ईसाई विरोधी था या साम्राज्यवाद-विरोधी? देखिए भाग 5.5।